Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

पंकज मित्र की कहानियों में भूमंडलीकरण का राजनितिक प्रभाव:

नीता पाण्डेय

शोध छात्र,

श्री गोविन्द गुरु यूनिवर्सिटी गोधरा, गुजरात

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

१९९० के बाद हिंदी कथा - साहित्य में एक नई पीढ़ी का आगमन हुआ जो अपनी पूर्ववर्ती पीढ़ी से अलग, नई संवेदनाओं और समस्याओ को लेकर हमारे समक्ष उपस्थित हुई। पंकज मित्र इसी नई पीढ़ी के कहानीकार हैं, इनका हिंदी कहानी में आगमन १९९० के बाद ही हुआ है। पंकज की कहानियों की अलग विषय वस्तु और भिन्न शैली है जिसकी वजह से वे दूसरों से बिल्कुल अलग और भिन्न प्रकार का स्वयं व्यक्त होती हैं।

पंकज मित्र कसबे के कहानीकार हैं। वे तमाम राष्ट्रीय - अंतर्राष्ट्रीय समस्याओं को कस्बे के सन्दर्भ में दिखाते हैं। पंकज छोटे कसबे के बड़े लोकनायक की भांति हैं, जो भूमंडलीकरण, पूँजीवाद और रिश्तों के बदलते समीकरणों को लेकर हमारे सामने उपस्थित होते हैं। इनकी कहानियों से गुजरते हुए यह कहना पड़ता है कि उन्होंने कथा - साहित्य के रूप और शिल्प को बदलकर ही रख दिया है। इनका जीवन अनुभव और दृष्टिकोण बहुत विस्तृत और व्यापक है।

पंकज मित्र की रचनाएँ स्थानीयता और आंचलिकता की सीमा का अतिक्रमण कर राष्ट्रीय - अंतर्राष्ट्रीय स्तर तक पहुँच जाती हैं। पंकज की कहानी का पात्र बिलौती महतो की समस्या सिर्फ उस कसबे के किसान की या बिलौती महतो की निजी समस्या न रहकर सम्पूर्ण देश के किसानों की समस्या बनकर प्रस्तुत होती है। उसकी हृदयविदारक पुकार मन को विचलित कर जाती है। इनके पात्र अंग्रेजी, हिंदी और बंगला आदि भाषा के शब्दों पर अपनी स्थानीयता का रंग चढ़ा कर बोलते हैं। स्थानीय मुहावरे के प्रयोग इनकी कहानियों की जान हैं। पंकज मित्र की स्थानीयता सोची - समझी या किसी योजना के तहत नहीं, बल्कि वह परिस्थति, कथानक और पात्रों की मांग के ऊपर आधारित है।

पंकज मित्र में किस्सागोई की अद्भुत क्षमता है। जहाँ कहानी की कोई संभावना नहीं दिखती या पाई जाती है वे वहीं कहानी की गुंजाइश ढूढ लेते हैं। इनके यहाँ भूमंडलीकरण, पूंजीवाद, उदारीकरण और विश्वबाजार की चपेट में आया हुआ गाँव है, जो अब काफी बदल चूका है। बदले हुए कस्बे के हिसाब से उनके यहाँ नायक, लोककथा, किम्बदंतियाँ, मुहावरे, देशज शब्द और फ़िल्मी गीत के टुकड़े आए हैं। पंकज मित्र की एक कहानी में कई कहानियाँ निकलती हैं।

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

इक्कीसवीं सदी के विकास के इस दौर में, आज भी हम वर्ण - व्यवस्था और जाति - पाँति जैसी कुत्सित वृत्तियों से अभी भी उबर नहीं पाए हैं। पंकज मित्र की 'ओपेंडिसाइटिस' कहानी इक्कीसवीं सदी की सबसे ज्वलंत समस्या जाति - पाँति को प्रमुखता से उदघाटित करती हुई कहानी है। यह कहानी हमारे समय की सबसे बड़ी समस्या पर काफी तीक्ष्ण प्रहार करती हुई दिखाई देती है। इस कहानी में कहानीकार ने ऊँची जाति की मानसिकता को परत - दर - परत खोलकर रख दिया है। कहानी में 'ओपेंडिक्स' की बिमारी कहानी के पात्र परमवीर सिंह को है। 'ओपेंडिक्स' हमारे शरीर का एक अनुपयोगी अंग है, जो समय - बेसमय अपना असर दिखाते रहता है। 'ओपेंडिक्स' के इस भयानक दर्द से उबरने का सिर्फ और सिर्फ एक ही रास्ता है, इसे काटकर शरीर से अलग कर देना है। हमारे शरीर में 'ओपेंडिक्स' का बचे रहना यानी, जाति - पाँति को मानना, इस बात का प्रमाण यह है कि हमारा विकास अभी भी शेष हैं। अभी भी हम इस जातिगत भेदभाव की समस्या से पुर्णतः उबर नहीं पाए हैं।

अब सबसे बड़ा प्रश्न यह है कि इस बीमारी का इलाज क्या है? हमारे द्वारा ऐसी कौन - सी युक्ति अपनाई जाए, जिससे यह 'ओपेंडिक्स' अपनी उपस्थिति दर्ज करना छोड़ दे ? हमें ऐसा क्या करना चाहिए जिससे एक मनुष्य दुसरे मनुष्य को अपने से नीच, पतित, अछूत और असमान न समझे ? जिस प्रकार समय के साथ 'ओपेंडिक्स' की बिमारी कम हो गई है, ठीक उसी प्रकार से वर्तमान दौर में जाति - पाँति भी अनुपयोगी है और यह कम होनी चाहिए। अब यह जाति - पाँति नामक 'ओपेंडिक्स' समाज और देश को बहुत तकलीफ और दर्द दे रहा है, इसलिए इसका ख़त्म हो जाना ही समाज और देश के लिए बेहतर है। लेकिन एक सच्चाई यह भी है कि अपने राजनितिक स्वार्थ की पूर्ति के लिए इस हद तक पहुँच जाते हैं। इस दर्द से उबरने के लिए बचपन में ही इस 'ओपेंडिक्स' को निकालना जरुरी है। और इसके निकालने से ही हम विकास के रास्ते पर तेजी से बढ़ सकते हैं। विकास के इस समय में जाति को मानना काफी आडम्बरयुक्त लगता है। ' विकास के इस ज़माने में हमें झूठी जाति के भेदभाव और अभिमान को छोड़ना होगा। जिस प्रकार समय पर यदि 'ओपेंडिक्स' का इलाज नहीं किया जाए तो, यह ब्लास्ट कर जाता है और कई बार मरीज की जान भी चली जाती है, ठीक उसी प्रकार समय रहते समाज में तेजी से फ़ैल रही वर्ण - व्यवस्था नामक बिमारी का इलाज भी करना होगा, नहीं तो एक

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

दिन यह भी ब्लास्ट होगी, जिसमें हम सब झुलस जाएँगें। 'ओपेंडिक्स' की एक और विशेषता है, यह जिसके अन्दर होती है उसे बर्बाद करती है, अर्थात जातिगत भेदभाव को मानने वाले ही विनाश के कगार पर पहुँचते हैं। जाति नामक 'ओपेंडिक्स' एक ऐसी भयंकर बीमारी है, जो दुसरे को नहीं बल्कि खुद को ही मार डालती है।

'बोनसाई' कहानी के नायक अचिंत्यनारायण यानी चिंतू का प्रिय जुमला है - 'मेरे सपनों में आसमान की ऊंचाई की बहक है और आँखों में हरियाली की झलक, मेरे आँखों में झांकिए।' कहानी से गुजरते हुए हम देखते हैं कि सचमुच चिंतू के इरादे आसमान की ऊंचाई को छूने के ही हैं। पर, कहानी और चिंतू की विडम्बना यह कि वह आसमान की ऊंचाई को नहीं छू नहीं पाता है। उसके हरे - भरे सपने उसकी आँखों में ही सिमट कर रह जाते हैं। आसमान से ऊँचे उसके सपनों के न पूरा होने की मुख्य वजह वह नहीं बल्कि हमारा समाज ही है। 'बोनसाई' प्रेमी यह समाज उसके सपनों को रौद देता है, क़तर देता है।

चिंतू के सपनों को कतरने में उसके पिता वकील साहब और पर्यावरण - प्रेमी ईमान साहब की विशेष भूमिका है। वकील साहब चिंतू के सपनों को कतरने के लिए कैंची के रूप में अपनी पत्नी का इस्तेमाल करते हैं और ईमान साहब अपनी बेटी सायमा का। चिंतू का एक से रिश्ता माँ का है और दुसरे से प्रेमिका का। यानी, उसका इन दोनों से मन और दिल का रिश्ता है। ये दोनों लोग इस बात को बखूबी जानते हैं कि चिंतू इनकी बात को कभी भी टाल नहीं सकता था। हम यह महसूस कर सकते कि एक मनुष्य को इंसान से 'बोनसाई' बनाने के लिए बड़े स्तर पर साजिश रची जा रही थी और इस साजिश में समाज को दो प्रतिष्ठित लोग शामिल हैं। शायद इन्हें चिंतू के सपनों का अंदाजा हो चुका था और ये कभी नहीं चाहते थे कि कोई इनसे बड़े कद और पद का हो जाए और उनसे ज्यादा प्रतिष्ठा प्राप्त कर सके। इसलिए ये दोनों अपने – अपने तरीके से चिंतू के सपनों और हौसले को क़तर डालते हैं और उसे आगे नहीं बढ़ने देते हैं।

कहानी में हम देखते हैं कि आसमान की ऊंचाई छूने के अरमान वाला चिंतू को 'बोनसाई' से सख्त नफरत है। प्रश्न यह उठता है कि उसे 'बोनसाई' से क्यों नफरत है? हम सब जानते हैं कि 'बोनसाई' की दुनिया एक गमला ही होती है और उतने तक ही सिमित रह जाती है। साथ ही उसका स्वाभाविक विकास नहीं होने दिया जाता या शायद हो भी नहीं पाता।

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

वह जब भी जैसे ही सर उठाता है, तब उसे कैंची से क़तर दिया जाता है। उसे हमेशा बौना बनाकर रखा जाता है और चिंतू को बौना बनने और बौना बनाने वाले लोगों से सख्त नफरत होती है। इसलिए उसे उसके पापा भी पसंद नहीं हैं। उनका उसे 'बोनसाई' जैसा बनाना पसंद नहीं है। पर 'बोनसाई' प्रेमी वकील साहब चिंतू को 'बोनसाई' की तरह काट – छाँटकर, अपने मन के अनुकूल रखना चाहते हैं। जैसे किसी सजावट के सामान को रखा जाता है। क्योंकि वकील साहब के पिता ने भी वकील साहब के साथ ऐसा ही किया था जिसकी वजह से उनका सोचने का तरीका भी वैसा ही हो गया था।

एक 'बोनसाई' बनाने में या कहें एक इंसान को बौना और छोटा बनाने या बनाए रखने में बहुत वक्त लगता है। हर रोज उस पर निगरानी रखनी पड़ती है, हर समय यह डर लगा रहता है कि नजर से ओझल हुए नहीं कि नई डालियाँ, नई पत्तियाँ और नए सपनों के पंख लेकर उड़ चले और उन्हें नई चीजें पसंद नहीं। नई डालियाँ या कहें नए सपनों का पंख देखते ही वे कैंची लेकर उसे कतरने लग जाते हैं। 'बोनसाई' को जिस जगह गमले में लगाया जाता है, उस गमले की पेंदी में छेद भी कर दिया जाता है। इसका मतलब यह कि किसी को बौना बनाने के लिए ये लोग उसके आधार में ही छेद कर देना होता हैं और जिसका आधार कमजोर हो जाता है वह कभी ज्यादा आगे नहीं बढ़ सकता,उसका विकास अवरुद्ध हो जाता है। जिस प्रकार 'बोनसाई' का जमीन से जुड़ाव नहीं होता, उसी प्रकार 'बोनसाई' प्रेमी लोग अपने शिकार को जमीन से जुड़ने ही नहीं देते क्योंकि वे जानते हैं कि जमीन से जुड़ते ही वे अपनी जगह बना लेगें और ये नहीं चाहते कि कोई अपनी जगह बना पाए और उनसे आगे निकल सके। ईमान साहब अपना रंग तब दिखातें हैं, जब एम. एन. सी. नामक कम्पनी कुआरी नदी पर बाँध बनाने का ठेका ले लेती है। इनवायरमेंटल प्रेमी होने का दिखावा करने वाले ईमान साहब का यह कहना था कि उस बाँध को बनाने के लिए हजारों एकर जंगल काटने होंगें तथा जिसकी कारण गाँव के गाँव डूब जायेंगें। वातावरण को प्रदूषण रहित रखने तथा लोगों के जीवन को बचाने के लिए ईमान साहब जमीन आसमान एक कर देने की बात कहते हैं। ईमान साहब चिंतू को इस विषय पर एक रिपोर्ट तैयार करने को कहते हैं, जिसे दिल्ली के 'इंटरनेशनल सेमीनार ऑफ़ इनवायरमेंट' में पढ़ा जाना था। चिंतू के इस काम में मदद करने के लिए ईमान साहब सायमा को भी साथ - साथ लगा देते हैं और चिंतू अपनी पूरी मेहनत, निष्ठा और ईमानदारीपूर्वक दिन भर गर्मी और लू के थपेड़ों को सहता

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

हुआ, गाँव गाँव घूम - घूम कर लोगों से मिलकर, उनसे बातचीत करके , जंगल के जीवन से खुद गहरे जुडकर आँकड़े एकत्रित करता है। वह रात - दिन इस कोशिश में लगा रहता है कि बाँध के बनने से जंगल के लोगों के जीवन प्रवाह में कौन - कौन सी रूकावटें आ सकती हैं। इस पेपर को तैयार करने में चिंतू को पुरे डेढ़ महीने लगे थे और इंटरनेशनल सेमीनार में पेपर पढने के बाद उसकी पीठ थपथपाई गई थी, उसे खूब शाबाशी मिली। पेपर पढने के बाद ईमान साहब ने चिंतू को घर लौट जाने को कहा और खुद एक सप्ताह बाद घर लौटे। वापस आते ही उन्होंने सायमा से कहा कि कोई उनसे मिलने आए तो उसे मना कर दे क्योंकि उन्हें एक बहुत जरुरी काम है।

इधर ईमान साहब अपने को कमरे में बंद कर लेते हैं और उधर एम. एन. सी. नामक कंपनी कुआरी नदी पर बाँध बनाने के लिए डम्पर वगैरह लानी शुरू कर देती है। चिंतू यह देखकर आवाक रह जाता है और इस बात की जानकारी देने के लिए वह ईमान साहब के पास जाता है। ईमान साहब के घर पहुँचकर चिंतू को सायमा से यह ज्ञात होता है कि वे उससे मिलना नहीं चाहते और कोई केम्पेन वगैरह नहीं होगा, इस बात को वह भूल जाए। चिंतू की ऊँची आवाज सुन ईमान साहब बाहर आकर कहते हैं -'आयम कन्विन्सड,फिलहाल कोई नुकसान नहीं है उन्हें अपना काम करने देने में। आखिर डेवलपमेंट भी तो जरुरी है। जब सिचुएशन खतरे के निशान को पार करेगी, तब देखेंगें। एंड नाऊ आयम आँफुली टायर्ड। सायमा ! प्लीज़ आस्क हिम टु स्पेयर अस एंड यू कम इन।"

यहाँ ध्यान देने योग्य यह बात है कि ईमान साहब एक सप्ताह से जो दिल्ली में थे,उन एक सप्ताह में वह कंपनी के साथ सांठ - गांठ कर रहे थे। हमारे देश में यही होता है, इमानदार और मेहनती चिंतू जैसे लोगों को हमेशा दरकिनार कर दिया जाता है। चिंतू ने सारी रिपोर्ट तैयार किया था , उसने लोगों की समस्याओं को जाना था और कन्विन्सड ईमान साहब हो गए। जंगल के निवासियों ने जिस मनुष्य तक अपनी समस्याएँ पहुंचाई थी, उसकी आवाज को दबा दिया गया। उसकी आवाज के सहारे उन हजारों लोगों की आवाजों को भी दबा दिया गया। वर्षों से विकास के नाम पर जल,जंगल और जमीन पर कब्ज़ा किया जाता रहा है।

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

कहानी के एक और पहलू पर अभी बात करना शेष है, ईमान साहब सायमा को चिंतू के साथ इसलिए भेजते हैं कि वह उसके काम पर निगाह रख सके। अपने लक्ष्य की प्राप्ति हेतू ईमान साहब अपनी लड़की को हथियार के रूप में इस्तेमाल करते हैं। सायमा के साथ चिंतू के कुछ करने से भी उन्हें कोई परहेज नहीं है। कहानी में हम देख हैं कि चिंतू जब उसे चूमता है तो वह विरोध भी नहीं करती है। कहीं - न - कहीं ईमान साहब ने उसे इसकी भी छूट दे रखी थी। हम कहानी में यह देख सकते हैं कि ईमान साहब जैसे लोग किस हद तक गिर सकते हैं। और किस तरह से ईमान साहब उसे 'बोनसाई' की तरह कैसे बौना बना देते हैं। उन्हें यह कतई मंजूर नहीं कि चिंतू का नाम और कद उनसे बड़ा हो जाए। उसके कद को या कहें उसके हाथ - पाँव को काटने के लिए कैंची के रूप में अपनी लड़की का इस्तेमाल भी करने से बाज नहीं आते हैं।

कहानी का अंत इन पंक्तियों से होता है – "चिंतू चला जा रहा था - चिलचिलाती धुप में। सूरज एकदम सर पर था और उसका साया बहुत ही नन्हा - सा बन रहा था - धरती पर उग आए बिल्कुल एक बोनसाई की तरह। " आखिर यही तो ईमान साहब चाहते थे और वे जो चाहते थे वह हो गया।

पानी हमारी तमाम प्राथमिक जरूरतों में से एक है। मनुष्य एक दिन बिना भोजन के रह सकता है लेकिन बिना पानी के नहीं रह सकता। जीवन जीने के लिए जितनी साँस की जरुरत है, उतनी ही पानी की। पर आज विश्वबाजार की दुनिया में सभ्यता और विकास के नाम पर, पानी पर भी कब्ज़ा किया जा रहा है। प्रकृति ने मनुष्य को जीवन के जीने के लिए जो चीजे सौपी थी, आज उन सब चीजों पर चंद पूंजीपतियों का कब्ज़ा बढ़ता जा रहा है और हमारी सरकारें उनकी इस इच्छा को पुरे मन से सफल बनाने में लगी हुई है।

कहानीकार पंकज मित्र अपनी कहानी 'बीन पानी डॉट कॉम' में इसी षड़यंत्र का पर्दाफ़ाश करते हैं। पंकज बहुत ही खूबी के साथ यह बताते हैं कि कैसे विकास के नाम पर एक - एक कर सभी प्राकृतिक संसाधनों पर चंद पूंजीपतियों और सरकार के द्वारा कब्ज़ा किया जा रहा है। नदी और तालाब बड़ी - बड़ी कम्पनियों के आधीन होते जा रहें हैं। पूँजी और बाजार के हमले से आज हर जगह बोतल बंद पानी बिक रहा है। यह हमारे समय का सबसे बड़ा कडवा सच है।

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

'बीन पानी डॉट कॉम' कहानी में पंकज मित्र बहुत ही बारीकी से यह दिखाते हैं कि कैसे लोगों को बोतल बंद पानी खरीदने के लिए विवश किया जाता है और लोग पानी खरीदने के लिए किस तरह से मजबूर हो रहें हैं। लोगों को जोर - जबरदस्ती से नहीं, बल्कि पूरी योजना के तहत इसके लिए मजबूर किया जा रहा है। हम देखते हैं गाँव के छोटे - छोटे स्टेशनों पर पानी का नल तो है, पर नल में पानी नहीं आता है, सारी टोटियाँ सूखी पड़ी रहती हैं और किस तरह हमारी सरकारें और पूंजीपति इसमें मिले हुए हैं। पहले सरकार जनता को खुश करने के लिए वोट बटोरने के लिए जगह - जगह नल लगवाती है और बाद में जीत जाने के बाद, पूंजीपतियों को खुश करने के लिए इन नलों को या तो तुडवा देती है या फिर पानी का कनेक्सन कटवा देती है। ताकि, आम जनता बोतल बंद पानी खरीदने के लिए विवश हो जाए। हमारी ही सरकार हमारे सामने कोई विकल्प नहीं छोड़ रही है। आज नदी, तालाब और दरिया पर बड़ी - बड़ी कम्पनियों और पूंजीपतियों का साम्राज्य स्थापित हो गया है। आज इनके इशारे पर हमारी सरकारें उठ - बैठ रही हैं, ये रिमोट की तरह हमें तथा हमारे देश को चला रहें हैं। आज पानी के इंतजाम की बागडोर इन कम्पनियों ने ही थाम लिया है। जनता की तंदुरुस्ती के नाम पर ये कंपनिया तंदुरुस्त होती जा रही हैं।

आज विकास और राजनीति के नाम पर या कहें देश - भक्ति के नाम पर या धर्म के नाम पर पूंजीपति, सेठ और राजनेता देश - समाज में एक सांस्कृतिक प्रदूषण फैला रहें हैं। यह सांस्कृतिक प्रदूषण ध्वनि या धुआं प्रदूषण से कहीं अधिक घातक है। पंकज मित्र की 'अफसाना प्रदूषण का ...' शीर्षक कहानी अपने में बहुअर्थी है। इस कहानी की शुरुआत सांस्कृतिक - धार्मिक प्रदूषण से होती है, जिसकी पृष्ठभूमि में १९९२ की साम्प्रदायिक पृष्ठभूमि वाली घटना है। यह सांस्कृति के नाम पर एक ख़ास राजनितिक दल के द्वारा फैलाया जाता है। राजनीति के ये घोड़े भाई - चारे की नरम घास को अपने टापों तले रौदते हुए सड़क से संसद तक का सफ़र तय करते हैं। इनकी इस यात्रा में सबसे अधिक सहायक बनते हैं कई धर्म गुरु। ये धर्म गुरु, धर्म की नहीं, बल्कि 'दुर्गन्ध की प्रतिमूर्ति' हैं। पंकज मित्र लिखते हैं -'एक कदीम इमारत के मिस्मार होने की आवाज पूरे मुल्क में गूंज उठी थी लेकिन जो 'आह' हर जगह थी और बहुतों को सुनाई नहीं दे रही थी, वह थी एक भरोसे के टूटने की' इसी भरोसे के टूटने की वजह से, कमरूआ का बेकरी जला दिया जाता है और वह अपने

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

कस्बे को छोड़ रूंधे गले और भारी मन से दिल्ली की और कूच करता है। दिल्ली के नाम पर लगभग दिल्ली से बाहर अपने मामूजान भाई रफ़ीक की छोटी सी बेकरी में उसका हाथ बंटाने लगता है।

पंकज मित्र बहुत ही कम शब्दों में इस समस्या को दिखा जाते हैं कि कैसे कुछ लोग अपने स्वार्थ की सिद्धि के लिए लगातार सांस्कृतिक प्रदूषण को फैला रहें हैं। पर ऐसे समय में भी बजरंगी लाल चौरसिया और शरफुद्दीन जैसे लोग भी है जो सांस्कृतिक एकता की मिशाल छोड़ जाते हैं और उनकी इस एकता को उनके बाद कमरूद्दीन और उसकी बीबी रोक्साना खातून बरकरार रखती है।

किसानों की आत्महत्या की समस्या को भी पंकज मित्र अपनी कहानियों में उठाते हैं। वे सिर्फ इस समस्या को उठाकर छोड़ नहीं देते, बल्कि उनकी आत्महत्या को किस तरह से पूंजीवादी समाज द्वारा बेचा जाता है और उसका कैसा दुष्प्रचार किया जाता है , इसकी भी पुष्टि करते हैं। 'आज, कल, परसों तक ...' कहानी में व्यक्त किया गया हैं कि कैसे एक परिवार के तीन सदस्य भूख, गरीबी, बेरोजगारी और कर्ज से तंग आकर आत्महत्या कर लेते हैं। गाजियाबाद के पास हीरापुर गाँव का साठ वर्षीय बलराम सिंह नामक किसान कर्ज, फसल की बर्बादी और बेंक से क्रेडिट कार्ड समय से न मिल पाने की वजह से आत्महत्या कर लेता है। इसी किसान का बड़ा बेटा रणवीर नोएडा के एक प्लास्टिक के खिलौने की कंपनी में काम करता था, जिसे आठ महीने से तनख्वाह नहीं मिली थी। रणवीर मजदूरी कर अपने किसान पिता का कर्ज को चुकाना चाहता था, लेकिन इसे यह कहकर निकाल दिया जाता है कि इस आदमी को भगाओ, ये इस कंपनी पर अतिरिक्त बोझ है। आर्थिक उदारीकरण के चलते ये छोटी - छोटी कम्पनियाँ बड़ी - बड़ी कम्पनियों के हाथों बिक रही हैं, बाजार में सस्ते दामों में चाइना का खिलौना उपलब्ध हो रहा है, जिसकी वजह से ये भारतीय कम्पनियाँ बंद हो रही हैं और सरकार की इस विदेशी पूँजी विनिमय निति की चपेट में आ रहें थे रणवीर जैसे कुछ लोग। अंत में रणवीर गरीबी और कर्ज से तंग आकर कंपनी के गेट के सामने आत्मदाह कर लेता है। किस तरह आत्मसम्मान से भरे पिता और पुत्र को जीवन से अधिक आसान मौत लगी। समस्या यहाँ पर ही खत्म नहीं होती उस किसान पिता का छोटा बेटा और उस मजदूर का छोटा भाई तेजप्रताप,जो एक साइबर कैफे चलाता है, वह सेक्स रैकेट में पकड़ा जाता है या कहा जा सकता है कि फँसाया

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

जाता है।

कहानी के दूसरे पक्ष में पंकज मित्र न्यूज़ चैनल वालों की खबर लेते हैं और उनकी मानसिकता को उजागर करते हैं। कहानीकार यह दिखाता है कि कैसे टी. आर. पी बढ़ाने के लिए मिडिया वाले इन खबरों का बाजारीकरण करते हैं। सच्चाई, संवेदना, मानवीयता और इंसानियत इनमे लेश मात्र नहीं पाई जाती है। कहानी के अंत में खबरिया चैनल वाले इस आत्महत्या की उलझन को किस तरह से सुलझाते हैं कि हमारा समाज शर्मसार हो जाए। उनके अनुसार रणवीर की पत्नी और तेजप्रताप के बीच अवैध सम्बन्ध था, तेजप्रताप नोएडा में सेक्स रैकेट चलता था और उसके इस काम में उसकी भाभी भी साझेदार थी, यही बात रणवीर को नागवार गुजरी और उसने खुद को जलाकर आत्महत्या कर ली। अब बचे किसान पिता बलराम सिंह के लिए उसकी पत्नी ने जहर देकर मार डाला। अंत में पुलिस रणवीर की पत्नी को पकड़ कर जेल ले जाती है। इस कहानी में हम देख सकते है कि कैसे दो आत्महत्या को हमारे न्यूज़ चैनल वाले सेक्स रैकेट और अवैध संबंध दिखाकर इस घटना को सनसनीखेज खबर बना जाते हैं। वे सारी सच्चाई जानते हुए भी ऐसा करते हैं।

'आज, कल, परसों तक ...' कहानी में पंकज मित्र यह भी दिखाते है कि एक तरफ सरकार की तरफ से किसानों के लिए नई - नई योजनाओं की घोषणा की जाती है और दूसरी तरफ गरीबी और ऋण के बोझ से हैरान और परेशान होकर आत्महत्या कर रहें हैं, एक तरफ सरकार लोगों को अधिक - से - अधिक काम देने की बात कर रही है और दूसरी तरफ मजदूरों को कारखानों से निकाला जा रहा है। आखिर यह कैसा विरोधाभास है? सरकार की यह कैसी दोहरी निति है , सरकार का यह दोहरा चरित्र और निति किसान और मजदूरों को ले डूबती है। हमारे किसान - मजदूर भाई इस दोहरी - चौतरफा मार को सह नहीं पा रहें हैं और परेशान होकर आत्महत्या कर लेते हैं।

इस कहानी के बीच – बीच में खबरिया चैनल के माध्यम से जो विज्ञापन दिखाए गए हैं और प्रधानमंत्री के मुख से जो वक्तव्य दिलवाया गया है वह हमारी व्यवस्था पर एक जबरदस्त तमाचा है और यह तमाचा पंकज मित्र मारते हुए दिखाई देते हैं। आजादी के आज सत्तर वर्ष बाद भी मेहनत और मुनाफा का ताल - मेल नहीं बैठ रहा है। विदेशी बीज, देशी सरकार और गलत योजनाएँ किसानों को आत्महत्या करने पर मजबूर कर रहीं हैं। पहले पहल विदेशी बीज किसानों को फसल में

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

बढोत्तरी और मुनाफा देकर ललचाती हैं और फिर उनकी कमर तोडती हैं। देशी बीज कम पैसे और कम लागत में गारंटी के साथ उपजाता था, लेकिन इस विदेशी बीज की कोई गारंटी नहीं और ऊपर से खर्च भी अधिक होता है। इस विदेशी बीज में 'हारी - बीमारी बर्दाश्त करने की ताकत' बहुत कम होती है। जिसकी वजह से किसानों को जरुरत से ज्यादा मात्रा में खेतों में खाद डालनी पड़ती है, धीरे - धीरे यही खाद बाद में मिटटी की उर्वरा शक्ति को भी खत्म कर देता है। खेत की उर्वरा शक्ति कम होने के बाद न तो कंपनी की बीज काम आती है, न खाद - पानी और न ही कीटनाशक। पंकज मित्र की कहानी 'बिलौती महतो की उधार फिकिर' में इसी समस्या को बड़ी मार्मिकता के साथ दिखाया गया है। इस कहानी के किसान बिलौती महतो की बैचैनी, उसका दुःख मन को भीतर - ही - भीतर बैचैन कर देता है। इस कहानी में हम यह भी देखते हैं कि समय के साथ आज शोषण का तरीका भी बदल गया है। इसी शोषण की वजह से बिलौती पागल हो जाता है और बलराम सिंह की तरह आत्महत्या कर लेता है।

कहानीकार पंकज मित्र किसानों के साथ - साथ आदिवासियों को भी अपनी कहानी में जगह देते हैं। 'कसबे की एक लोककथा बतर्ज बनती और बबली' में पंकज मित्र यह दिखाते हैं कि कुछ बड़े सरकारी अधिकारी और आदिवासी कल्याण जनजातीय विकास जैसे नाम वाली संस्थाएँ इन आदिवासियों की सहायता करने के नाम पर अपना स्वार्थ सिद्ध कर रहीं हैं। ऐसे लोग आदिवासी समाज के विकास के लिए सरकारी योजनाओं का लाभ आदिवासियों तक पहुँचाने के बजाय अपना खुद को ज्यादा लाभ और विकास पहुँचाते है। विकास के नाम पर सभी अपना उल्लू सीधा करने में लगे हुए हैं और कई योजनाओं का लाभ ऐसे कितने लोग पांच वर्ष से तो कितने लोग दस वर्ष से इसका लाभ ले रहे हैं। कहानी की सबसे बड़ी विडम्बना यह है कि एतवा नामक आदिवासी को बंटी नामक अधिकारी नक्सली कह कर गोली मार देता है और आदिवासी कल्याण के लिए सरकार की तरफ से आए पचास लाख रूपए का गबन भी कर जाता है। उसकी पत्नी बबली जो खुद एक सरकारी अधिकारी है वह एतवा बिरहोर के मौत के बाद सेवा के नाम पर मेवा खाने के लिए एन.जी.ओ. की शुरुआत करती है। एन.जी.ओ. चलाने वाले अधिकांश लोगों की यही सच्चाई है कि वे कल्याण और विकास के नाम पर आने वाले सारे फंड से अपना अधिक कल्याण और विकास करते हैं। पंकज मित्र की यह कहानी इस सच्चाई को तार -

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

तार कर देती है। 'चमनी गंझू की मुस्की' शीर्षक की कहानी में हम देखते हैं कि कैसे बेटू इमाम, आदिवासी चमनी गंझू के भोलेपन और उसके अनपढ़ होने का नाजायज फायदा उठाता है। चमनी गंझू द्वारा बनाए गए आदिम भितिचित्रों को अपना बताकर, उसकी खोज का सारा श्रेय वह खुद ले लेता है। उसके द्वारा बनाए गए दीवार पर पेड़ - पौधे, जानवर और जानवरों के शिकार के आदिम चित्रों का खोजकर्ता वह स्वयं बन जाता है। प्रेस - कॉन्फ्रेंस कर इस दुर्लभ खोज का सारा श्रेय वह खुद लेता है। बाद में इसी से वह देश - विदेश की यात्राएँ करता है, उसे अंतर्राष्ट्रीय कला जगत में पहचान प्राप्त होती है। पर इस कला की जननी गंझू वहीँ - की - वहीँ रह जाती है। उसे एक चित्र के बदले मात्र दो सौ रूपये मिलते हैं और इन्हीं चित्रों को बेटू इमाम अंतर्राष्ट्रीय बाजार में प्रदर्शनी में रखकर हजारों - लाखों में बेचता है। कहानी में कुछ क्षण के लिए यह लगता है कि बेटू को चमनी गंझू से प्रेम हो गया है, वह उससे शारीरिक सम्बन्ध भी बनाता है, पर यह भ्रम भी जल्द ही टूट जाता है जब कहानी में यह पता चलता है कि वह आदिवासी चमनी गंझू का इस्तेमाल कर रहा था। वर्षों से यही तो होता आ रहा है और पंकज मित्र अपनी कहानी के माध्यम से यही दिखाने की कोशिश करते हैं कि बंटी, बबली या बेटू जैसे बड़े लोगों के जीवन में एतवा और चमनी गंझू की कोई जगह नहीं है। ये लोग सिर्फ़ अपने स्वार्थ के लिए उनका इस्तेमाल करते हैं और स्वार्थ सिद्ध हो जाने के बाद एतवा की तरह उन्हें नक्सली कहकर गोली मार देते है या चमनी गंझू की तरह बेइज्जत करके निकाल देते है।

विकास की अग्नि में ये आदिवासी लोग झुलस रहें हैं और उनके नाम पर नदी, जंगल और पहाड़ों पर सरकारों और कई अन्य संस्थानों के द्वारा कब्ज़ा किया जा रहा है। इन आदिवासियों का दोहन और शोषण का एक कारण यह भी है कि ये लोग जहाँ रहते हैं वहाँ ज्यादातर जगहों पर धरती की कोख कोयले और लोहे से भरी हुई है जिसपर सरकार और पूंजीपति कब्ज़ा करना चाहते हैं।

इन कहानियों के माध्यम से कहानीकार पंकज मित्र किसान समुदाय, मजदूर वर्ग, आदिवासी समाज स्त्री समाज, दलित सामाज, पर्यावरण, योग और पानी की समस्या को प्रमुखता से उठाते हैं। भूमंडलीकरण, पूंजीवाद और बाजारवाद की दुनिया इन लोगों का किस तरह से शिकार कर रही है और कितने पात्र इसका शिकार हो रहें हैं। पंकज मित्र की कहानियाँ

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

इस विषय को प्रमुखता से अभिव्यक्ति प्रदान करती हैं। हम देख सकते हैं कि इस समय में कैसे विकास के बहाने किसान, मजदूरों और आदिवासियों शोषण हो रहा है। इन्हें चारों तरफ से हर तरह की मार और तकलीफों का सामना करना पड रहा है।

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

सन्दर्भ सूचि:

(१) मित्र, पंकज, 'अपेंडिसाइटिस' (क.) 'जिद्दी रेडियो', राजकमल प्रकाशन, दिल्ली,प्र. संस्करण -२०१४ , पृष्ठ – ३९

(२) मित्र, पंकज, 'बोनसाई'(क.), क्विजमास्टर और अन्य कहानियाँ, आधार प्रकाशन, पंचकूला, संस्करण -२०११, पृष्ठ – ७२,७३,७७

(३) मित्र, पंकज, 'बिन पानी डॉट कॉम'(क.), क्विजमास्टर और अन्य कहानियाँ, आधार प्रकाशन, पंचकूला, संस्करण -२०११, पृष्ठ – ३१– ३२

(४) मित्र, पंकज, 'अफसाना प्रदुषण का...'(क.), क्विजमास्टर और अन्य कहानियाँ, आधार प्रकाशन, पंचकूला, संस्करण -२०११, पृष्ठ – १०५ -०६

(५) मित्र, पंकज, 'कसबे की एक लोक कथा बतर्ज बंटी बबली' (क.) 'जिद्दी रेडियो', राजकमल प्रकाशन, दिल्ली,प्र. संस्करण -२०१४ , पृष्ठ – ४६-४७

(६) मित्र, पंकज, 'कसबे की एक लोक कथा बतर्ज बंटी बबली' (क.) 'जिद्दी रेडियो', राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, प्र. संस्करण -२०१४ , पृष्ठ – ३३,४७ ,७९ ,८१

(७) पराशर, पंकज, 'भूमंडलीय यथार्थ और हाशिये का समाज: सन्दर्भ 'क्विजमास्टर'(लेख), 'लमही'(पत्रिका), अप्रैल – जून -२०१२, पृष्ठ – ८

(८) मित्र, पंकज, 'आज, कल, परसों तक ...' (क.) 'हुडुकलुल्लु', राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, प्र. संस्करण - २००८ , पृष्ठ – १०,१४,१५,१९-२०